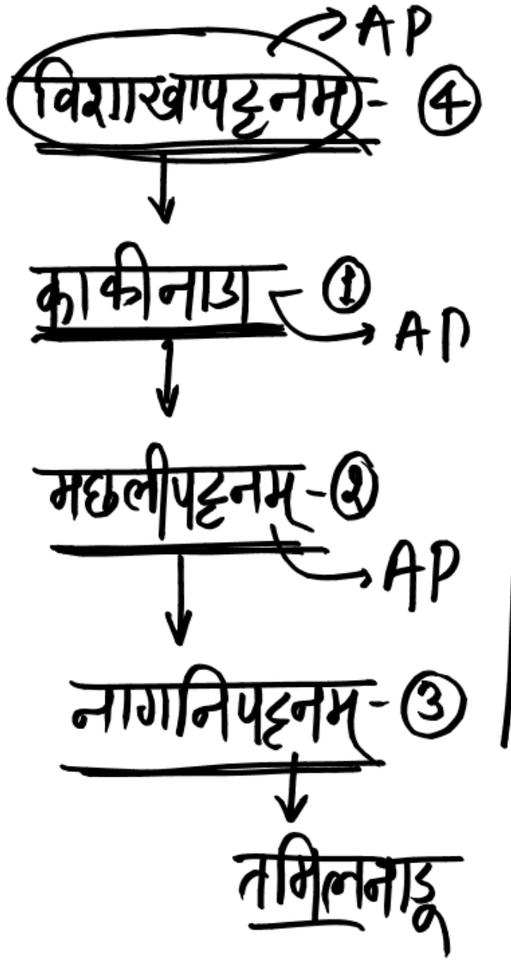

भारत के निम्नलिखित बंदरगाहों को उत्तर से दक्षिण दिशा में व्यवस्थित कीजिए :

1. काकीनाड़ा
2. मछलीपट्टनम
3. नागपट्टिनम
4. विशाखापत्तनम

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(A) 1, 2, 3, 4

(B) 4, 1, 2, 3 ✓

(C) 1, 3, 2, 4

(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं

विशाखापट्टनम - ④ → AP
↓
काकीनाडा - ① → AP
↓
मछलीपट्टनम - ② → AP
↓
नागनिपट्टनम - ③
↓
तमिलनाडु

Note :- हाल ही में शिपिंग मंत्रालय द्वारा विझिंजम को देश का पहला ट्रांस शिपमेंट पोर्ट घोषित गया है!

→ केरल ✓

→ अडाणी समूह की हिस्सेदारी

काकीनाड़ा बंदरगाहः

- काकीनाड़ा डीप वॉटर पोर्ट **भारत के पूर्वी तट पर स्थित है।**
- यह **आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले** में है और रणनीतिक रूप से **विशाखापत्तनम और चेन्नई के प्रमुख बंदरगाहों के बीच स्थित है।**
- इसे नवंबर 1997 में आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा चालू किया गया था। हालाँकि, 1999 में बंदरगाह का निजीकरण कर दिया गया था।

मछलीपट्टनम बंदरगाहः

- यह **बंगाल की खाड़ी के तट पर एक प्रस्तावित गहरे समुद्री बंदरगाह है।** यह **आंध्र प्रदेश में कृष्णा जिले के जिला मुख्यालय मछलीपट्टनम में स्थित है।**

नागपट्टिनम बंदरगाहः

- नागपट्टिनम **भारतीय राज्य तमिलनाडु में एक बंदरगाह शहर** और नागपट्टिनम जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है।
- **चोल साम्राज्य के दौरान यह वाणिज्य और पूर्व की ओर जाने वाले नौसैनिक अभियानों के लिए उनके महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में कार्य करता था।**

विशाखापत्तनम बंदरगाहः

- विशाखापत्तनम बंदरगाह **भारत के बारह प्रमुख कामकाजी बंदरगाहों में से एक** है और **आंध्र प्रदेश का एकमात्र प्रमुख बंदरगाह है।**
- माल ढुलाई की मात्रा के हिसाब से यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा सरकारी स्वामित्व वाला बंदरगाह है और पूर्वी तट पर सबसे बड़ा है।

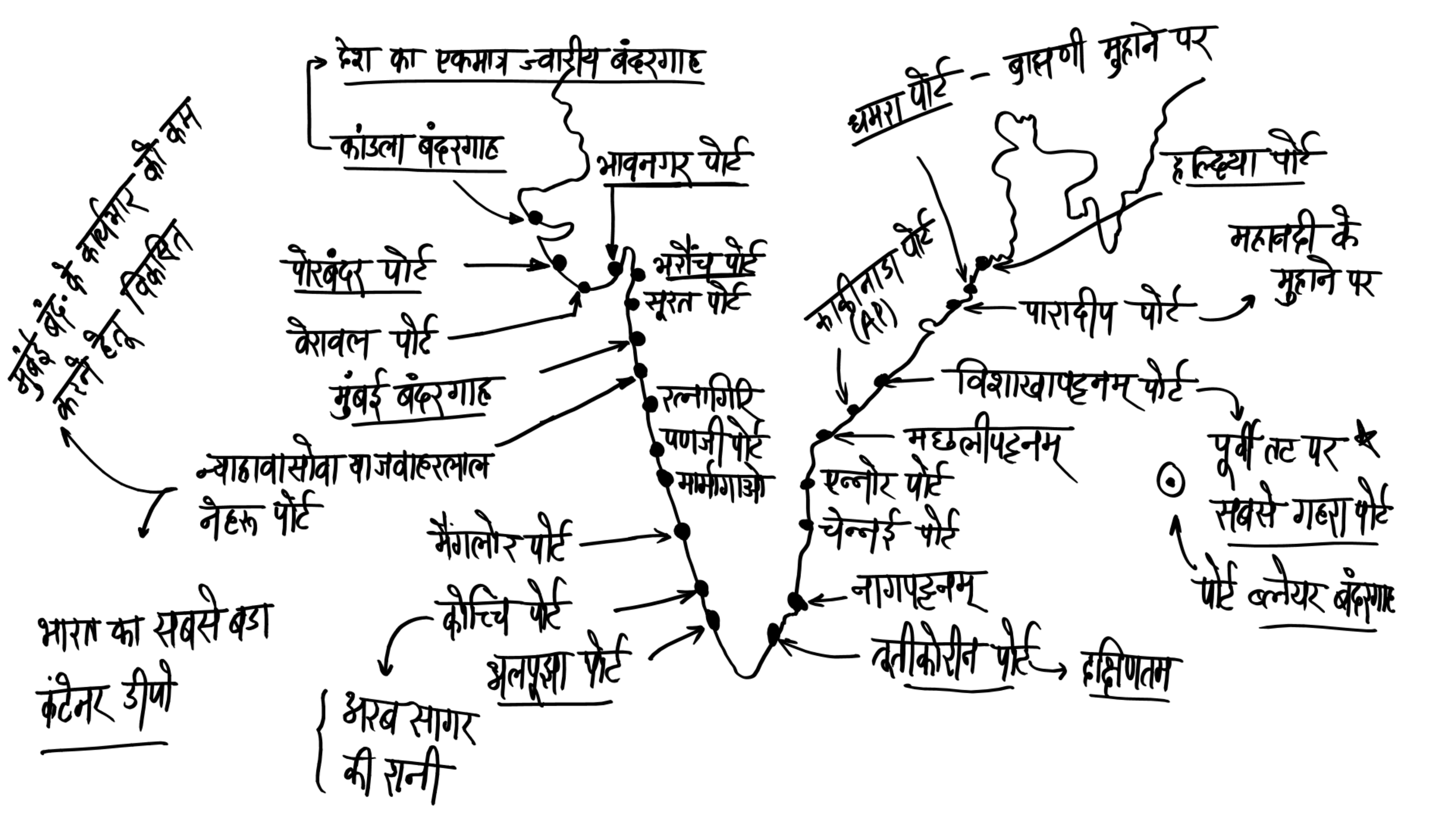
देश का एकमात्र ज्वारीय बंदरगाह
कांडला बंदरगाह
भावनगर पोर्ट
पोरबंदर पोर्ट
भरौंच पोर्ट
सूरत पोर्ट
वेरावल पोर्ट
मुंबई बंदरगाह
रत्नागिरि
पणजी पोर्ट
मार्मागाओ
न्हावाशेवा या जवाहरलाल नेहरू पोर्ट
मुंबई बंदरगाह के कार्यभार को कम करने हेतु विकसित
भारत का सबसे बड़ा कंटेनर डीपो
मैंगलोर पोर्ट
कोच्चि पोर्ट
अलपुझा पोर्ट
अरब सागर की रानी
धमरा पोर्ट - ब्राह्मणी मुहाने पर
हल्दिया पोर्ट
महानदी के मुहाने पर
कांडीनाड पोर्ट (AP)
पारादीप पोर्ट
विशाखापट्टनम पोर्ट
पूर्वी तट पर सबसे गहरा पोर्ट
मछलीपट्टनम
एन्नोर पोर्ट
चेन्नई पोर्ट
पोर्ट ब्लेयर बंदरगाह
नागपट्टनम
तूतीकोरीन पोर्ट
दक्षिणतम

पारादीप बंदरगाह

- पारादीप बंदरगाह **ओडिशा के जगतसिंहपुर** जिले में भारत के पूर्वी तट पर एक प्राकृतिक, गहरे पानी का बंदरगाह है।
- यह **महानदी और बंगाल की खाड़ी के संगम** पर स्थित है।

मैंगलोर बंदरगाह

- न्यू मैंगलोर बंदरगाह भारत में कर्नाटक राज्य में पनाम्बुर, मैंगलोर में एक गहरे पानी में स्थित सभी मौसम का बंदरगाह है।
- यह पश्चिमी तट पर सबसे गहरा आंतरिक बंदरगाह है।

कालीकट बंदरगाह केरल में है।

कोचीन बंदरगाह

- कोचीन बंदरगाह या कोच्चि बंदरगाह **अरब सागर - लक्षद्वीप सागर- हिंद महासागर समुद्री मार्ग** पर का एक प्रमुख बंदरगाह है।
- बंदरगाह **कोच्चि की झील** में दो द्वीपों पर स्थित है: **विलिंग्डन द्वीप और वल्लारपड़म**, फोर्ट कोच्चि नदी के ओर जिसकी मुहाना लक्षद्वीप सागर पर खुलता है।

पश्चिमी तट का सबसे गहरा आंतरिक बंदरगाह

वास्कोडिगामा 1498 में कालीकट तट पर पहुंचा था।

प. दीनदयाल उपाध्याय पोर्ट भी कहा जाता है।

- कांडला पश्चिमी तट गुजरात
- पारादीप पूर्व तट ओडिशा
- जेएनपीटी पश्चिमी तट महाराष्ट्र
- मुंबई पश्चिमी तट महाराष्ट्र
- विशाखापत्तनम पूर्वी तट आंध्र प्रदेश
- चेन्नई पूर्वी तट तमिलनाडु
- कोलकाता पूर्वी तट पश्चिम बंगाल
- मैंगलोर पश्चिमी तट कर्नाटक
- तूतीकोरिन पूर्वी तट तमिलनाडु
- मोरमुगाओ पश्चिमी तट गोवा
- कोच्चि पश्चिमी तट केरल
- कृष्णापटनम बंदरगाह पूर्वी तट आंध्र प्रदेश
- एन्नोर पूर्वी तट तमिलनाडु

डॉ. आर० एल० सिंह ने 1971 में भारत का अपना जलवायु विभाजन प्रस्तुत किया। उन्होंने सबसे गर्म और सबसे ठंडे महीनों की तापमान स्थितियों और औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर देश को 10 जलवायु प्रभागों में विभाजित किया।

इस वर्गीकरण के अनुसार, बिहार राज्य सबह्यूमिड संक्रमणकालीन डिवीजन में आता है।

आर० एल० सिंह के वर्गीकरण स्कीम के अनुसार, बिहार किस प्रकार के जलवायु प्रदेश में आता है?

(A) आर्द्र दक्षिण-पूर्व

(B) उपार्द्र संक्रमणकालीन

(C) उपार्द्र महाद्वीपीय

(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं

संस्थागत सुधार:

- सरकार ने जमींदारी प्रथा को समाप्त कर दिया और इसके बाद छोटी-छोटी भूमि जोतों का एकीकरण किया।
- नवीन एवं उन्नत तकनीकों की जानकारी प्रदान करने के लिए रेडियो और टेलीविजन का व्यापक उपयोग किया गया है तथा विशेष मौसम बुलेटिन भी शुरू किए गए हैं।
- फसल बीमा किसानों को प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं से होने वाले नुकसान से बचाता है।
- बैंकों एवं सहकारी समितियों के माध्यम से पूंजी या निवेश की उपलब्धता।
- विभिन्न फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों द्वारा उगाई गई फसल के लिए न्यूनतम मूल्य सुनिश्चित करता है।
- किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना (पीएआईएस) किसानों के लाभ के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई कुछ योजनाएं हैं।

किसानों के फायदे के लिए संस्थागत सुधार था

(A) भूमि सुधार

(B) ग्रामीण बैंकों का निर्माण

(C) किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम

(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं

सूती वस्त्र उद्योग

सूती वस्त्र उद्योग भारत के परंपरागत उद्योगों में से एक है। प्राचीन और मध्यकाल में, ये केवल एक कुटीर उद्योग के रूप में थे। भारत संसार में उत्कृष्ट कोटि का मलमल, कैलिको, छींट और अन्य प्रकार के अच्छी गुणवत्ता वाले सूती कपड़ों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था। भारत में इस उद्योग का विकास कई कारणों से हुआ। पहला, भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है एवं सूती कपड़ा गर्म और आर्द्र जलवायु के लिए एक आरामदायक वस्त्र है। दूसरा, भारत में कपास का बड़ी मात्रा में उत्पादन होता था। देश में इस उद्योग के लिए आवश्यक कुशल श्रमिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। वस्तुत: कुछ क्षेत्रों में लोग सूती वस्त्रों का उत्पादन पीढ़ियों से कर रहे थे और अपनी कुशलता को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित करते रहे और इस प्रक्रिया में उनकी कुशलताएँ पक्की हो गईं।

प्रारंभ में, अंग्रेज़ों ने स्वदेशी सूती वस्त्र उद्योग के विकास को प्रोत्साहित नहीं किया। वे कच्चे कपास को

विश्व में सूती वस्त्र उद्योग की राजधानी

लंकाशायर औद्योगिक क्षेत्र

मानचेस्टर और लिवरपूल स्थित अपनी मिलों के लिए निर्यात कर देते थे और वहाँ तैयार माल को बेचने के लिए भारत ले आते थे। यह कपड़ा सस्ता होता था क्योंकि भारत के कुटीर उद्योगों की तुलना में यूनाइटेड किंगडम की मिलों में बड़े पैमाने पर उत्पादन होता था।

1854 में पहली आधुनिक सूती मिल की स्थापना मुंबई में की गई। इस शहर को सूती वस्त्र निर्माण केंद्र के रूप में कई लाभ थे। यह गुजरात और महाराष्ट्र के कपास उत्पादक क्षेत्रों के बहुत निकट था। कच्ची कपास इंग्लैंड को निर्यात करने के लिए

सूती वस्त्र उद्योग की कब्रगाह

भारत का एकमात्र उद्योग, जो आत्मनिर्भर एवं मूल्य शृंखला में पूर्ण है, है

(A) लौह एवं इस्पात उद्योग

(B) कपड़ा उद्योग

(C) चीनी उद्योग

(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं

विश्व में प्रथम रेल सेवा: लीवरपुल व मैनचेस्टर के मध्य

1825 में

मुंबई पत्तन तक लाई जाती थी। इसलिए कपास स्वयं मुंबई नगर में उपलब्ध थी। इसके अतिरिक्त मुंबई उस समय भी वित्तीय केंद्र था एवं उद्योग प्रारंभ करने के लिए आवश्यक पूँजी भी उपलब्ध थी। रोज़गार अवसर प्रदान करने वाला बड़ा नगर होने के कारण यह श्रमिकों के लिए एक आकर्षक केंद्र था। इसलिए, सस्ते और प्रचुर मात्रा में श्रमिक भी आसपास ही मिल जाते थे। सूती वस्त्र मिलों के लिए आवश्यक मशीनों का आयात इंग्लैंड से किया जा सकता था। बाद में दो और मिलें– शाहपुर मिल और केलिको मिल– अहमदाबाद में स्थापित की गईं। 1947 तक भारत में मिलों की संख्या 423 तक पहुँच गई लेकिन देश विभाजन के बाद दृश्य बदल गया और इस उद्योग को एक बड़ा प्रतिसरण झेलना पड़ा। इसका कारण यह था कि अच्छी गुणवत्ता वाले कपास उत्पादक क्षेत्रों में से अधिकांश पश्चिमी पाकिस्तान में चले गए और भारत में 409 मिलें और केवल 29 प्रतिशत कपास उत्पादक क्षेत्र रह गए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस उद्योग में धीरे-धीरे पुनर्लाभ की स्थिति आई और अंतत: यह उद्योग फिर से विकसित हो गया।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग को दो सेक्टर्स में बाँटा जा सकता है : संगठित सेक्टर और असंगठित सेक्टर। विकेंद्रित सेक्टर के अंतर्गत हथकरघों (खादी सहित) और विद्युतकरघों में उत्पादित कपड़ा आता है। संगठित सेक्टर के उत्पादनों में तेज़ी से कमी आई है। यह 20 शताब्दी के मध्य में 81 प्रतिशत से घटकर 2000 में केवल लगभग 6 प्रतिशत रह गया है। वर्तमान में, देश में उत्पादित सूती वस्त्र हथकरघा सेक्टर की तुलना में विकेंद्रित सेक्टर में विद्युत करघों द्वारा अधिक उत्पादित किया जाता है।

कपास एक शुद्ध कच्चा माल है जिसका वजन निर्माण प्रक्रिया में नहीं घटता है। अत: अन्य दूसरे कारक, जैसे करघों को चलाने के लिए शक्ति, श्रमिक, पूँजी अथवा बाज़ार आदि उद्योग की स्थिति को निर्धारित करते हैं। वर्तमान में उद्योग को बाज़ार में या बाज़ार के निकट स्थापित करने की प्रवृत्ति पाई जाती है और बाज़ार ही यह निश्चित करता है कि किस प्रकार के कपड़े का उत्पादन होना चाहिए। तैयार माल के बाज़ार में अत्यधिक भिन्नता मिलती है। अतएव तैयार माल को बेचने के दृष्टिकोण से मिलों को बाज़ार के निकट स्थापित करना महत्वपूर्ण है।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मुंबई और अहमदाबाद में पहली मिल की स्थापना के पश्चात् सूती वस्त्र उद्योग का तेज़ी से विस्तार हुआ। मिलों की संख्या आकस्मिक रूप से बढ़ गई। स्वदेशी आंदोलन ने उद्योग को प्रमुख रूप से प्रोत्साहित किया क्योंकि ब्रिटेन के बने सामानों का बहिष्कार कर बदले में भारतीय सामानों को उपयोग में लाने का आह्वान किया गया। 1921 के बाद रेलमार्गों के विकास के साथ ही दूसरे सूती वस्त्र केंद्रों का तेजी से विस्तार हुआ। दक्षिणी भारत में, कोयंबटूर, मदुरई और बेंगलूरु में मिलों की स्थापना की गई। मध्य भारत में नागपुर, इंदौर के अतिरिक्त शोलापुर और वडोदरा सूती वस्त्र केंद्र बन गए। कानपुर में स्थानिक निवेश के आधार पर सूती वस्त्र मिलों की स्थापना की गई। पत्तन की सुविधा के कारण कोलकाता में भी मिलें स्थापित की गईं। जलविद्युत शक्ति के विकास से कपास उत्पादक क्षेत्रों से दूर सूती वस्त्र मिलों की अवस्थिति में भी सहयोग मिला। तमिलनाडु में इस उद्योग के तेज़ी से विकास का कारण मिलों के लिए प्रचुर मात्रा में जल-विद्युत शक्ति की उपलब्धता है। उज्जैन, भरूच, आगरा, हाथरस, कोयंबटूर और तिरुनेलवेली आदि केंद्रों में, कम श्रम लागत के कारण कपास उत्पादक क्षेत्रों से उनके दूर होते हुए भी उद्योगों की स्थापना की गई।

इस प्रकार, भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में जहाँ एक या एक से अधिक अनुकूल अवस्थितिक कारक विद्यमान थे, सूत्री वस्त्र उद्योग स्थापित किए गए। इस प्रकार कच्चे माल के स्थान पर बाज़ार अथवा सस्ते स्थानिक श्रमिक या विद्युत शक्ति की उपलब्धता अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई।

वर्तमान में अहमदाबाद, भिवांडी, शोलापुर, कोल्हापुर, नागपुर, इंदौर और उज्जैन सूती वस्त्र उद्योग के मुख्य केंद्र हैं। ये सभी केंद्र परंपरागत केंद्र हैं और कपास उत्पादक क्षेत्रों के निकट स्थित हैं। महाराष्ट्र, गुजरात और तमिलनाडु अग्रणी कपास उत्पादक राज्य हैं। पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और पंजाब दूसरे महत्वपूर्ण सूती वस्त्र उत्पादक हैं। (चित्र 8.11)

तमिलनाडु राज्य में सबसे अधिक मिलें हैं और उनमें से अधिकांश कपड़ा न बनाकर सूत का उत्पादन करती हैं। कोयंबटूर, जहाँ तमिलनाडु की लगभग आधे से अधिक मिलों के अवस्थित होने के कारण सबसे महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा है। चेन्नई, मदुरई, तिरुनेलवैली, तूतीकोरिन, थंजावूर, रामनाथपुरम और सेलम दूसरे महत्वपूर्ण केंद्र हैं। कर्नाटक में सूती वस्त्र उद्योग का विकास राज्य के उत्तरी पूर्वी भागों के

उत्तर भारत का मैनचेस्टर- कानपुर

दक्षिण भारत " " - कोयम्बटूर

कपास उत्पादक क्षेत्रों में हुआ है, जहाँ देवनगरी, हुब्बलि, बल्लारि, मैसूरु और बेंगलुरु महत्वपूर्ण केंद्र हैं। सूती वस्त्र उद्योग कपास उत्पादक तेलंगाना प्रदेश में स्थित है। वहाँ अधिकांश कताई मिलें हैं जो सूत का उत्पादन करती हैं। हैदराबाद, सिकंदराबाद और वारंगल महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

उत्तर प्रदेश में कानपुर सबसे बड़ा केंद्र है। मोदीनगर, हाथरस, सहारनपुर, आगरा और लखनऊ कुछ अन्य महत्वपूर्ण केंद्र हैं। पश्चिम बंगाल में, सूती मिलें हुगली प्रदेश में स्थित हैं। हावड़ा, सीरामपुर, कोलकाता और श्यामनगर महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से सूती कपड़े के उत्पादन में लगभग 5 गुनी वृद्धि हुई है। सूती कपड़े को सिंथेटिक कपड़ों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। भारत में सूती वस्त्र उद्योग की और कौन-सी अन्य समस्याएँ हैं?

खरीफ फसल का उदाहरण कौन-सा है?

(A) मक्का

(B) गेहूँ

(C) मटर

(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं